thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ०७ ● ०७ अप्रैल, २०१५ वैशाख कृष्ण तृतीया, सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

राष्ट्र के लिए सर्वात्मना समर्पित दो महान विभूतियां राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत

भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य भारत माता की सेवा, धर्म व संस्कृति की रक्षार्थ अपना सम्पूर्ण जीवन देने वाले देश के पूर्व प्रधानमंत्री पं. अटल बिहारी बाजपेई को उनकी अस्वस्थता के कारण दिनांक २६ मार्च २०१५ को सभी प्रोटोकाल से हटकर महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने उनके निवास पर जाकर भारत रत्न सम्मान से अलंकृत किया। वहां उनके पहुँचने से पूर्व भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आकर राष्ट्रपति जी की अगवानी की। उक्त सम्मान के लिए बिना किसी पार्टी भेद के प्रायः सभी दलों के नेताओं ने वहां पहुँचकर पं. अटल बिहारी बाजपेई के निस्पृह एवं अजातशत्रु जीवन को मान्यता देकर उनका अभिनन्दन किया। श्री अटल बिहारी बाजपेई का जन्म ग्वालियर में हुआ। पढ़ाई के साथ ही सामाजिक जीवन में प्रवेश करने के बाद उनका घर सारा देश हो गया। वे कवि, विचारक, लेखक व अद्वितीय वक्ता हैं। वे अनेक वर्षो तक सांसद रहे। संसद में उनके भाषण को सभी मनोयोग से सुनते थे। अपने जीवन काल में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू उनके भाषण व गंभीर विचारों को सुनने के लिए अपनी उपस्थिति को अनिवार्य मानते थे। इससे पूर्व भारत के ६ पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न से सम्मानित किए जा चुके हैं ये सांतवें प्रधानमंत्री के रूप में भारत रत्न से अलंकृत किए गये हैं।

इसी वर्ष ३० मार्च २०१५ को राष्ट्रपति भवन में भारत के सर्वप्रथम स्वराज्य आन्दोलन के प्रस्तोता गंभीर चित्त, भारतीय संस्कृति व सभ्यता के मनसा वाचा कर्मणा पोषक हिन्दू विश्व विद्यालय बनारस के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय को मरणोपरांत महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा भारत रत्न सम्मान से अलंकृत किया गया। जिसे मालवीय जी की पौत्रवधू श्रीमती सरस्वती मालवीय पौत्री हेम शर्मा पौत्र जस्टिस गिरधर मालवीय एवं प्रेमधर मालवीय ने ग्रहण किया।

श्री मालवीय जी का जन्म २५ दिसम्बर, १८६१ को इलाहाबाद (उ.प्र.) के अहियापुर में हुआ था। शिक्षा भी वहीं हुई। वे प्रगल्भचेता विचारक और कर्मठ योद्धा थे। उनका स्वराज्य आन्दोलन के संचालन में विशिष्ट योगदान रहा। पं. जवाहर लाल नेहरू अपनी लेखनी से लिखते है कि श्री मालवीय जी से उनमें राष्ट्र भक्ति, राष्ट्र सेवा की भावना का उदय हुआ।

मालवीय जी ने सम्पूर्ण देश वासियों को सुशिक्षित बनाने के लिए काशी में हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना की थी वे हिन्दू महासभा के भी संस्थापक सदस्य थे। परंतु सामाजिक जीवन में उन्होंने संकीर्णता से रहित सभी को उच्च जीवन जीने की प्रेरणा दी। हिन्दू विश्व विद्यालय के प्रवेश द्वार से अन्दर जाते ही विश्व विद्यालय भवन से पहले उन्होंने एक मंदिर निर्मित कराया है। जिसमें मूर्तियों की पूजा के लिए नहीं अपने पूर्वजों के जीवन दर्शन को गंभीरता से समझकर तदनुरूप अपना जीवन निर्माण करने के लिए उन महापुरूषों के चित्र के साथ उनका परिचयात्मक जीवन दर्शन का आलेखन - राष्ट्र को सुसमृद्ध सुसंस्कृत बनाने, भारतीय संस्कृति और सभ्यता को गंभीरता से समझकर उसे सभी को अपने जीवन में उतारने की भावना से ही कराया। ऐसे महान दिव्य पुरूष का भारत रत्न सम्मान से अलंकरण (भले ही बहुत विलम्ब से हुआ) हम सभी भारतवासियों को गौरवान्वित कर रहा है।

इन दोनों ही महान पुरूषों के भारत रत्न सम्मान से सम्मानित करने के लिए भारत सरकार बधाई की पात्र है। आर्य

प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं आर्यमित्र साप्ताहिक परिवार की ओर से उसे शतशः बधाईयां।

●●●

वेदामृतम्

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ६.७०.६

ऋषिः वैश्वामित्रः। देवता पवमानः सोमः। छन्दः जगती।

(सोम) हे सोम परमात्मन्! (तू), (वृषा) वर्षक (होता हुआ), (देववीतये) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (पवस्य) प्रवाहित हो, (इन्द्रस्य) आत्मा के, (हार्दि) हृदय-रूप, (सोमधानं) सोम-कलश में, (आविश) प्रविष्ट हो। (बाधात्) बाधे जाने से, (पुरा) पहले, (नः) हमें, (दुरिता अति) पापचरणों से लंघाकर, (पारय) पार कर दे। (क्षेत्रवित्) मार्ग का ज्ञाता, (विपृच्छते) विशेषरूप से पूछने वाले के लिए, (दिशः) दिशाओं को, (आह हि) बताता ही है।

-डॉ. रामनाथ वेदालंकार

भारतीय संस्कृति की रक्षा में संस्कार नीव का पत्थर है।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य उप प्रतिनिधि सभा सम्भल द्वारा दिनांक २७, २८, २६ मार्च, २०१५ को आर्य समाज सम्भल में आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी थे। समारोह स्थल पर पहुंचते ही उप सभा व समाज के अधिकारियों ने प्रधान जी का भव्य स्वागत किया।

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में भारतीय जन मानस को वेदों की तरफ लौटने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की थी। वेदों से विमुख होने के कारण ही आज हमारी यह बिगड़ी दशा है। वैदिक ज्ञान से ही हमारी संताने संस्कारी व चरित्रवान बनती हैं आज पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण हमारे युवाओं को पतन के गर्त में ढकेलता चला जा रहा है। यदि अब भी हम न चेते तो बेड़ियां पुनः पराधीन कर दासता की लेगी। वेद सबसे प्राचीन ग्रथ है यह सारा विश्व मान चुका है। वेदों के ज्ञान से ही हमारे नवजवान युवक युवती संस्कारवान व चरित्रवान बनेंगे। भारतीय संस्कृति की रक्षा इसी में है कि हम वेदों की ओर लौटें। बच्चों को बाल्यकाल से ही संस्कारी बनायें।

इस आर्य महासम्मेलन में श्री दयाशंकर आर्य-मंत्री जिला सभा, श्री लक्ष्मी नरायण आर्य, श्री रमेश चन्द्र आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री व्योमेशजी श्री धर्मेन्द्र जी, श्री देवराज जी, श्री भोले सिंह त्यागी, श्री धर्मवीर जी, श्री हरेन्द्र कुमार, श्री प्रदीप आर्य, श्री ज्ञानदेव जी, श्री हर प्रसाद आर्य, श्री दीपेन्द्र आर्य, श्री वीरे सिंह, श्री तिलक सिंह, श्री हुलासी सिंह, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, श्री चन्द्रभानु आर्य, श्री देवराज आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री साहू विजय पाल सरन ने समारोह में उपस्थित सभी आर्य नर नारियों के प्रति आभार व्यक्त किया विशेष रूप से सभा प्रधान जी को अपने बहुमूल्य समय में से कुछ समय निकाल कर आने के लिए आन्तरिक कृतज्ञता व्यक्त की।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

आप पार्टी की अन्तःकलह में राजनीति का घृणित रूप प्रदर्शित

सभी देश हितैषी इस पर गंभीर चिन्तन करें

राजनीति शास्त्र परिवार समाज और विश्व को एक सूत्र में बांध कर सभी को सुख समृद्धि पूर्ण जीवन देने का विज्ञान है। महर्षि दयानन्द ने सुशासन के लिए वेदाधारित शासन व्यवस्था को चलाने के लिए राजा और प्रजा के मध्य में सामंजस्य के लिए राजा प्रजा के अधीन और प्रजा राजा के अधीन रहनी चाहिए-तभी सुख समृद्धिपूर्ण राष्ट्र बनाया जा सकता है। इसके लिए दोनों के मध्य राजार्य सभा और धर्मार्य सभा के गठन की अनिवार्यता बतायी है। कहा है कि यही सुशासन का सेतु है।

अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त कराने के लिए स्वराज्य आन्दोलन चला हमारे पूर्वजों ने संगठित रूप में एक साथ अंग्रेजों से लड़कर देश को स्वतंत्र कराया। आजादी के बाद जनता द्वारा चुनी सरकार बनी। देश को गणतंत्र कहा गया। लोक सभा राज्य सभा विधान सभा व विधान परिषद के नाम से दो सभायें भी सुशासन की भावना से बनायी गयी। जिनका भाव रखा कि सभी विषयों व समस्याओं को जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि उन सभाओं में विचार विनिमय के द्वारा तय करें, सुलझाये। परंतु ऐसा न हो सका। राजनेताओं ने धर्म का मर्म न जाना। पूजा पाठ को धर्म मान लिया और राजनीति में धर्म को बिसरा दिया।फलतः सांसद व विधायक का चुनाव लड़कर जैसे तैसे लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभा व विधान परिषद में पहुँचकर देश प्रदेश की सेवा भूलकर पार्टीबन्दी अपनी जेब भरने, अपने हाथ में शासन व्यवस्था रखने व अपनी नेतागिरी चमकाने के ही प्रयास करते रहते हैं। (अभी हाल में ही) उत्तर प्रदेश में विधायकों का वेतन व अन्य भत्ते बिना किसी विरोध के सर्वसम्मति से ५ मिनट में ही पास किये गये हैं। ऐसे कृत्य से देश हित प्रदेश हित स्वप्न सदृश हो जाता है।

हमारे देश में सम्प्रति अनेकों राजनीतिक दल हैं। लगभग ढाई वर्ष पहले इसके बीच एक और नया दल उभरा जिसका नाम आम आदमी पार्टी रखा गया। उस पार्टी के कार्यकर्ताओं में मुख्य अरविन्द केजरीवाल, प्रशान्त भूषण एडवोकेट, योगेन्द्र पाल यादव, किरण बेदी आदि कुछ लोग-श्री अन्ना हजारे के लोकपाल बिल बनाने के आन्दोलन में प्रमुख भूमिका में थे- बने और जोर शोर से जनता में अपने भाषणों से अपना स्थान बनाना प्रारम्भ किया। जन सामान्य ने समझा सम्भवतः यह नया दल देश व जनता के लिए सुशासन स्थापन के लिए नया मार्ग दर्शन देगा जिससे देश के दुर्दिन समाप्त होंगे। पहले ही निर्वाचन में उन्हें काफी सफलता मिली। दिल्ली में तो उनकी सरकार भी अन्य दलों के सहयोग से बन गयी। परंतु जनता को जो लुभावने सपने दिये थे उन्हें पूर्ण कर पाने में असमर्थता के कारण बड़ी ही चालाकी से १८ दिन में ही सरकार ने इस्तीफा दे दिया। जनता में बड़ी किरकिरी हुई। उससे बचने के लिए अनेक बहाने बनाये, जनता से माफी मांगी। जनता ने पिछली तकलीफ को भुला दिया। दिल्ली के दूसरे चुनाव में उनकी पार्टी को पूर्ण बहुमत से जिताया कि शायद अब यह अपनी भूलों को सुधार कर नयी पार्टी की रोशनी से दिल्ली व देश में नई रोशनी का प्रकाश फैलाकर जन सामान्य का हित करेंगे। परंतु दुर्भाग्य-जनता की यह आकांक्षा भी अतिशीघ्र ही धूलधूसरित हो गयी। पार्टी के नेताओं का असली चेहरा खुल गया। (गाली गलौच मारपीट यह सभ्य जनों का कार्य नहीं है यह सब तो जाहिल अनपढ़ों का काम हैं) परंतु आम आदमी पार्टी के अन्दर यह सब हुआ। जनता की आवाज को महत्व देने के स्थान पर व्यक्ति की आवाज ब्रह्मवाक्य के रूप में स्वीकार करने के लिए सभी छल छन्द किये गये। पार्टी के घटकों में मुख्य स्थान रखने वाले प्रशान्त भूषण व योगेन्द्र यादव आदि को बिना प्रजातंत्रीय परम्परा के प्रजातंत्र का नाटक करके पद से हटा दिया गया और वही सब झूठ फरेब जो अन्य दलों में प्रभावी होता है यहां भी जोर शोर से चल रहा है। पार्टी में कुछ लोगों के निष्कासन के बाद २ फाड़ हो गये- दोनों ही पक्ष मीडिया अखबारों में अपने को सही सिद्ध करने व दूसरे पक्ष को गलत सिद्ध करने में लगे हैं। यह देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है।

अस्तु आज देश के प्रबुद्ध जनो, नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि वे राजनीति में फैलते ऐसे विष को नष्ट करने के उपायों पर गंभीर चिन्तन करके देश को डूबने से बचायें। मेरी राय में देश में केवल पक्ष व विपक्ष दो ही दल होने चाहिए। अनेक दलों की स्थिति में स्वार्थ की भावना-विचारों में मेल न होने के बावजूद शासक दल को परास्त करने के लिए अनेक विपक्षी दल एक होकर काम में अडंगा लगाकर देश के धन व शक्ति व समय का दुरूपयोग करते हैं। निर्वाचन आयोग भी इस पर गंभीर चिन्तन करें और निर्वाचन में केवल दो बड़ी पार्टियों को ही मान्यता दे। जो निर्वाचन में सत्ता पक्ष व विपक्ष में बैठने का अधिकार प्राप्त करें। शेष पार्टियां जनता में अपने क्रियाकलापों से स्थान बनायें और हर निर्वाचन से पूर्व निर्वाचन आयोग समीक्षा करके सर्वाधिक जनप्रिय दो पार्टियों के मध्य निर्वाचन कराने की व्यवस्था को सुनिश्चित करायें ताकि निर्वाचित प्रतिनिधि सुशासन के लिए सही निर्णय करने में समर्थ हो। आशा है सभी देश हितैषी इस विषय पर गंभीर चिन्तन करके राष्ट्र हित के रक्षार्थ मार्ग दर्शन देंगे। सभी पार्टियों विशेषकर आम आदमी पार्टी के नेताओं से भी विनम्र अनुरोध है कि वे इस दुरवस्था पर गंभीर चिन्तन करके अपने जीवन को, विचारों को राष्ट्रहित में लगाने को दृढ़ प्रतिज्ञ बनें।

-सम्पादक

आर्य हिन्दू राजाओं का चारित्रिक आदर्श

-डॉ. विवेक आर्य

जहाँ एक ओर मुस्लिम आक्रान्ताओं ने हिन्दू लड़कियों को अगवा कर अपने हरम भरने की होड़ लगा रखी थी वहीं दूसरी ओर हिन्दू राजाओं जैसे महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, वीर दुर्गा दास राठौड़ ने अपने चरित्र के आदर्श से संसार के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण स्थापित किया था जिसे देख कर एक ही निष्कर्ष निकलता है कि बुर्के से अधिक शुद्ध विचार और आचरण की आज पूरे विश्व को नारी जाति के सम्मान के लिए आवश्यकता है। इस लेख को पढ़कर आप को महान हिन्दू राजाओं के शुद्ध चरित्र से प्रेरणा मिलेगी।

भारत देश की महान वैदिक सभ्यता में नारी को पूजनीय होने के साथ-साथ 'माता' के पवित्र उद्बोधन से संबोधित किया गया है।

मुस्लिम काल में भी आर्य हिन्दू राजाओं द्वारा प्रत्येक नारी को उसी प्रकार से सम्मान दिया जाता था जैसे कोई भी व्यक्ति अपनी माँ का सम्मान करता है।

यह गौरव और मर्यादा उस कोटि की हैं, जो कि संसार के केवल सभ्य और विकसित जातियों में ही मिलती हैं।

महाराणा प्रताप के मुगलों के संघर्ष के समय स्वयं राणा के पुत्र अमर सिंह ने विरोधी अब्दुर्रहीम खानखाना के परिवार की औरतों को बंदी बनाकर राणा के समक्ष पेश किया तो राणा ने क्रोध में आकर अपने बेटे को हुकुम दिया कि तुरंत उन माताओं और बहनों को पूरे सम्मान के साथ अब्दुर्रहीम खानखाना के शिविर में छोड़ कर आये एवं भविष्य में ऐसी गलती दोबारा न करने की प्रतिज्ञा करे।

ध्यान रहे महाराणा ने यह आदर्श उस काल में स्थापित किया था-जब मुगल अबोध राजपूत राजकुमारियों के डोले के डोले से अपने हरम भरते जाते थे। बड़े बड़े राजपूत घरानों की बेटियां मुगलिया हरम के सात पर्दो के भीतर जीवन भर के लिए कैद कर दी जाती थीं। महाराणा चाहते तो उनके साथ भी ऐसा ही कर सकते थे पर नहीं उनका स्वाभिमान ऐसी इज़ाज़त कभी नहीं देता था।

औरंगजेब के राज में हिन्दुओं पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। हिन्दू या काफिर होना तो पाप ही हो गया था । धर्मान्ध औरंगजेब के अत्याचार से स्वयं उसके बाप और भाई तक न बच सके, साधारण हिन्दू जनता की स्वयं पाठक कल्पना कर सकते हैं। औरंगजेब की स्वयं अपने बेटे अकबर से अनबन हो गयी थी। इसी कारण उसका बेटा आगरे के किले को छोड़कर औरंगजेब के प्रखर विरोधी राजपूतों से जा मिला था जिनका नेतृत्व वीर दुर्गादास राठौड़ कर रहे थे।

कहाँ राजसी ठाठ बाठ में किलों के अन्दर की शीतल छाया में पला बढ़ा अकबर, कहाँ राजस्थान की भस्म करने वाली तपती हुई धूल भरी गर्मियाँ। शीघ्र सफलता न मिलते देख संघर्ष न करने का आदी अकबर एक बार राजपूतों का शिविर छोड़ कर भाग निकला। पीछे से अपने बच्चों अर्थात् औरंगजेब के पोता-पोतियों को राजपूतों के शिविर में ही छोड़ गया। जब औरंगजेब को इस बात का पता चला तो उसे अपने पोते पोतियों की चिन्ता हुई क्योंकि वह जैसा व्यवहार औरों के बच्चों के साथ करता था कहीं वैसा ही व्यवहार उसके बच्चों के साथ न हो जाए। परन्तु वीर दुर्गा दास राठौड़ और औरंगजेब में भारी अंतर था। दुर्गादास की रगों में आर्य जाति का लहू बहता था। दुर्गादास ने प्राचीन आर्य मर्यादा का पालन करते हुए ससम्मान औरंगजेब के पोता-पोती को वापिस औरंगजेब के पास भेज दिया जिन्हें पाकर औरंगजेब अत्यंत प्रसन्न हुआ। वीर दुर्गादास राठौड़ ने इतिहास में अपने आर्य व्यवहार से स्वर्णिम शब्दों में लिखवा दिया। वीर शिवाजी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आर्य जाति की सेवा, रक्षा, मंदिरों के उद्धार, गौ माता के कल्याण एवं एक हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के रूप में गुजरा जिन्हें पढ़कर प्राचीन आर्य राजाओं के महान आदर्शों का पुनः स्मरण हो जाता है। जीवन भर उनका संघर्ष कभी बीजापुर से, कभी मुगलों से चलता रहा। किसी भी युद्ध को जीतने के बाद शिवाजी के सरदार उन्हें नजराने के रूप में उपहार पेश करते थे। एक बार उनके एक सरदार ने कल्याण के मुस्लिम सूबेदार की अति सुन्दर बीवी शिवाजी के सम्मुख पेश की। उसको देखते ही शिवाजी महाराज अत्यंत क्रोधित हो गए और उस सरदार को तत्काल यह हुक्म दिया कि उस महिला को ससम्मान वापिस उसके घर छोड़ आये। अत्यंत विनम्र भाव से शिवाजी उस महिला से बोले, ''माता आप कितनी सुन्दर हैं, मैं भी आपका पुत्र होता तो इतना ही सुन्दर होता। अपने सैनिक द्वारा की गई गलती के लिए मैं आपसे माफी मांगता हूँ।'' यह कहकर शिवाजी ने तत्काल आदेश दिया कि जो भी सैनिक या सरदार जो किसी भी ऊँचे पद पर होगा अगर शत्रु की स्त्री को हाथ लगायेगा तो उसका अंग छेदन कर दिया जायेगा।

कहाँ औरंगजेब की सेना के सिपाही जिनके हाथ अगर कोई हिन्दू लड़की लग जाती या तो उसे अपने हरम में गुलाम बना कर रख लेते थे अथवा उसे खुले आम गुलाम बाज़ार में बेच देते थे और कहाँ वीर शिवाजी का यह पवित्र आर्य आदर्श।

इतिहास में शिवाजी की यह नैतिकता स्वर्णिम अक्षरों में लिखी गई है।

इन ऐतिहासिक प्रसंगों को पढ़ कर पाठक स्वयं यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि महानता और आर्य मर्यादा व्यक्ति के विचार और व्यवहार से होती है। धर्म की असली परिभाषा उच्च कोटि का पवित्र और श्रेष्ठ आचरण है। धर्म के नाम पर अत्याचार करना केवल अज्ञानता और मूर्खता है।

thearyasamaj.org

धरोहर.....

कवि प्रहलाद सिंह "वेकल"

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

कल भी था कल-कल भी है कल ।

कल कल में ही - कल गया निकल ।।

इस प्रकार की मनोविनोदी भाषा और वेद प्रचार तथा नैतिक शिक्षा का ग्राम-ग्राम, नगर-नगर बच्चों में बूढ़ों में स्कूल, कालेज के युवाओं में अपनी बात को मिशनरी भाव से प्रचारित करने वालो कवि वेकल जी के दर्शन लोग नहीं कर पायेगें उनकी कविताओं की उत्सुकता बच्चों में सदैव विद्यमान रहती थी उनका व्यवहार बड़ा सहज और सरल था उनकी वाणी में मिठास और आकर्षण था वे किसी मंच या माइक के मोहताज नहीं थे वे चलती फिरती आर्य समाज थे उन्हें ये संस्कार महात्मा अमर स्वामी जी एवं कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर अरनियाँ से विरासत में मिले थे। अरनियाँ से मात्र २ मील दक्षिण दिशा में स्थित ग्राम बचोली में आपका जन्म हुआ था आज से ६५ वर्ष पूर्व कोई जन्मतिथि नहीं लिखता था आपकी शिक्षा उर्दू भाषा में हुई थी कविताये बनाने का आपको पूर्वजन्म का ही वरदान था आशुकवि के रूप में आप प्रसिद्धि को प्राप्त थे। आर्य समाज के सम्मेलन में यदि कोई कमी दिखाई देती तो कविता में ही स्पष्ट कर देते थे मुझे स्मरण आ रहा है बु० शहर में एक उत्सव में विवाद हो गया था तब आपने सुनाया था।

अरे गनौरा रह गया कोरा
बिन विद्या अपनाई।
बिना मेल के फेल हो गए
लुटिया खूब डुबोई।।

कवि वेकल जो छुपता तो होती खूब पिटाई ।।२।।

प्रारम्भ और अन्त की पंक्तियाँ याद हैं बीच में पूरा विवरण कविता में सुनाकर लोगों को शर्मिन्दा किया और प्रचार के प्रति उपदेश भी दिया। यदि कही पर उत्साहित करते तो भी कविता बनाकर प्रोत्साहन देते थे - एक ग्राम के उत्सव में गए वहाँ के लोगों ने सेवा में रूचि नहीं ली तो भी कविता में कमी को सुनाया -

अरे तू चित्सौना तो सोना
है पर कमी कौन सी आई।
पहले उत्सव में जब आते
थे मिलती थी दूध मलाई।।

इस प्रकार की कविता सुनाकर अधिकारियों कार्यकर्त्ताओं के नाम भी साथ में जोड़कर कविता सुनाते तो सभी प्रसन्न हो जाते थे अतः सम्मेलन में लोग उनकी सेवा सम्मान करते थे कि आज की कविता में हमारा नाम भी सुनायेगें ऐसी होड़ और उत्सुकता पैदा करने वाले युवा प्रचारक थे कवि वेकल जी।

मेरा परिचय लगभग १९७४ में हुआ था मुझे भी स्कूल कालेजों में ले जाकर वे कविता सुनाते मुझे भाषण के लिए कहते बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़ता था आपका व्यापक परिचय था दिल्ली से मुरादाबाद विजनौर से अलीगढ़ के बीच के क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार स्कूलों में अधिक किया है किसी भी स्कूल में जाकर बच्चे बुलाये कवितायें सुनाई और दूसरे स्कूल में चल दिये इसी प्रकार वे ग्राम-ग्राम में नैतिक शिक्षा का प्रचार करते थे आपने कवितायें बहुत लिखी है कुछ पुस्तकें छप चुकी हैं -

क्या इसी को कहते हैं परिवर्तन -
भूल गया भूमि पर चलना -
नाप रहा है आज गगन ।।

युवाओं को बुड्ढे को भी व्यंग्य में लिखा है -

बुढ़िया काले बाल करके
बन्दरिया जैसी - शब्दों से उसे आह्वान किया। माताओं पर भी तीखा व्यंग्य किया है-

जो घर में भेदभाव करे वह
रानी नही अच्छी
जो बच्चों और बड़ों को न समझाये वह जिठानी नही अच्छी
जो इधर-उधर की लगावे
उसकी माँ ही नही उसकी नानी भी नहीं अच्छी।

इस प्रकार से परिवार का सन्तुलन बनाने का उपदेश कविता से ही देते रहना उनकी दिनचर्या में बस गया था सदैव एकाकी पद यात्रा करके ही अपने अभियान को चलाते रहे उनका न आना सभी परिचितों को अखरता था कि कवि जी नहीं आये तो वे कहीं दूर है अथवा बीमार हैं। एक बार १९९० में किसी ने प्रचार कर दिया कि कवि जी मर गए जगह-जगह श्रद्धांजालियां दी गई और वे गुरूकुल पूठ के उत्सव पर अचानक आ गए सभी आश्चर्य में पड़ गये कवि जी ने फिर कविता सुनाकर हास्य रस से तृप्त किया आपसे पूछा कवि जी कहाँ जा रहे हो तो बोले आगे दुनियां समाप्त हो गई क्या ? पीछे कहां से आये हो क्यों धरती टूट गई क्या ? आप मनोविनोदी भी थे और व्यवहारिकता का उपदेश करते थे। आपके स्वास्थ्य का राज पैदल यात्रा ही था मैं पिछले लगभग १५ वर्षो से कहता था कवि जी अब बाहर जाना बन्द करो तो बोले मुझे जल्दी मारना चाहते हो यदि किसी दिन कविता सुनाने का अवसर न मिला तो नींद नही आती। अतः समय देना ही पड़ता था आज यह समाचार सुनकर लग रहा है कि कवि जी पूर्व की तरह फिर आ जायेगे लेकिन मैं जब परिवार में गया तो वास्तव में वे नहीं आयेगे क्योंकि उन्होंने अन्तिम संस्कार कर दिया है उनके बड़े पुत्र सुखवीर सिंह और सन्तोष कुमार जी से बातें हुई पौत्र ऋषि देव सतेन्द्र सिंह, नरेश आर्य - प्रशान्त आर्य - लवकुश आर्य भी मिले बताया सायंकाल खिचड़ी खाने के लिए कहा खिचड़ी सामने आई चम्मच से मुख तक जाते ही स्वयं कहीं दूर चले गए। किसी से ६५ वर्ष तक सेवा नही कराई ऐसे कर्म योगी के लिए गुरूकुल परिवार - आर्य मित्र परिवार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० परिवार आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है सभा कोषाध्यक्ष डा० धीरज सिंह तो अत्यन्त निकटस्थ हैं सभी की संवेदनायें परिवार के साथ हैं शौदान सिंह जी आर्य ने गतवर्ष आर्य समाज द्वारा सम्मानित किया था गतवर्ष पत्नी वियोग हुआ और इस वर्ष स्वयं वियोगी हो गए आपके परिवार में परम्परा सुरक्षित बनी रहे ऐसी कामना सभी आत्मीय सदस्यों से करते हुए उन्हें हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

गुरूकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर- हापुड़
मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ.प्र. लखनऊ
मो.९८३७४०२१९२

योग ही मानव में एकत्व की भावना ला सकता है

हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

विश्व में मानव चेतना ही प्रधान है। इस चेतना को जागृत एवं सबमें एकत्वभाव लाने के लिए एक मात्र योग है। इसी योगाभ्यास से परिवार से लेकर समाज एवं सारे देश परस्पर अपने को एक कुटुम्ब समझने लगता है। योग से इतनी दैवी शक्ति प्राप्त होती है कि वह सबमें सर्वोदयी भावना उत्पन्न कर देती है, उसी से ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना जागृत होती है। वेद ने जिस 'आत्मावत्सर्वभूतेषु' की भावना प्रतिपादित की है। जियो और जीने दो में सर्वराज्य की उदात्त भावनायें हैं। ऐसे राज्य में अमित्रता की भावना नष्ट हो जाती है। अतः यदि सबका साथ मिले तो उससे सबका विकास संभव होने लगता है।

जब मानव योग का अभ्यास करने लगता है तो उन्हें आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त हान लगता ह। परस्पर का द्वेष भाव समाप्त होने लगता है। अमित्रता और बदले की भावना नही रहती। ऐसे योग से युक्त जन की बुद्धि और वाणी में ओज और तेज विद्यमान रहता है। वह ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। (यजु.अ.३६ मं. १८) मैं मित्र की प्रेमपूर्ण दृष्टि से सब प्राणियों को देखूँ और मैं भी सब प्राणियों के द्वारा मित्रतापूर्ण प्रेम दृष्टि से देखा जाऊँ।अर्थात् न मेरा कोई शत्रु हो और न मैं किसी का शत्रु बनूँ। इस प्रकार की भावना परस्पर होनी चाहिए। तभी समाज में भातृ-भाव, मैत्री, प्रीति, सौजन्य, सहानुभूति, सहृदयता, समान बुद्धि एवं सर्वाभ्युदकारी भावनायें वृद्धि को प्राप्त कर सकती हैं।

सच्चे योग के अभ्यास से मानव मनुर्भव बन जाता है। वह अनैतिक कार्य नही कर सकता और न वह किसी को बलात्कार, भ्रूण हत्या भ्रष्टाचार करने देता है। योग करने वालों की आत्मा अधर्म की ओर जाने से रोकती है।

ऋषि वैज्ञानिक पतंजलि ने योग में प्रवेश के लिए सर्वप्रथम यम नियमों को पालन करने का आदेश दिया है। जैसे आसनों को करने से शारीरिक लाभ होता है वैसे ही यौगिक क्रियाओं से आध्यात्मिक लाभ होता है। योगाभ्यास करने के पहले यदि यम् नियमों का पालन न किया जाये तो योग का वास्तविक फल योग करने वालों को प्राप्त नहीं होता, इसलिये पहले 'यम-नियमों' को अपनाना आवश्यक है- तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहः यमाः। शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानिनियमाः। सत्य-मन वचन और क्रिया तीनों में सत्य के प्रतिष्ठित होने से योग दर्शन भाष्यकार व्यास के लेखानुसार योगी की वाणी अमोघ हो जाती है। आस्तेय-मन, वाणी और क्रिया से किसी की भी चोरी न करना। अहिंसा-मन, वाणी और क्रिया से किसी भी प्राणी को तकलीफ न देना। अपरिग्रह- न्यायपूर्वक धनादि का संग्रह एवं भोग करें। ब्रह्मचर्य- शरीर में उत्पन्न हुए रज वीर्य की रक्षा करते हुए लोकोपकारक विद्याओं का अध्ययन करना।

नियम- अपने कर्म के फल से दुखी न होना पड़े इसलिए योगी को नियमों का पालन करना चाहिए।

शौच- वाह्य और अनतःकरणों को शुद्ध रखना।

संतोष- पुरूषार्थ से जो कुछ प्राप्त हो उससे अधिक की इच्छा न करना। तप- शीतोष्ण, सुख-दुखादि को एक जैसा समझते हुए नियमित और संयमित जीवन व्यतीत करना। स्वाध्याय- ओंकार का श्रद्धापूर्वक जप करना और वेदादि सत्य शास्त्रों का अध्ययन करना। ईश्वर प्रणिधान-ईश्वर का प्रेम हृदय में रखते हुए और ईश्वर को अत्यंत प्रिय परमगुरू समझते हुए अपने समस्त कर्मो को अर्पण करना।

योग-''युज'' धातु से योग शब्द सिद्ध है जिस धातु के अर्थ मिलना जुलना आदि के हैं युज्यतेऽसौयोगः जो युक्त करें मिलावे उसे योग कहते हैं।

योगियों के मुकुटमणि, योगशिरोमणि पतंजलि ने योग की परिभाषा इस प्रकार की है- योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। (योगदर्शन-१-२) अर्थात् चित्त की वृत्तियों में निरोध का नाम ही योग है। चित्त की वृत्तियां क्या हैं? जब वह बाहर काम करता है तब उसका नाम बहिर्मुखी वृत्ति होता है और जब अन्तर काम करता है तब उसका नाम अन्तर्मुखी वृत्ति होता है। जीव चूँकि प्रयत्नशील होता है इसलिये दोनों वृत्तियों में से एक न एक सदैव जारी रहती है। बहिर्मुखी वृत्ति जब जारी रहती है तब जीव अन्तःकरणों के माध्यम से जगत में इन्द्रियों द्वारा काम किया करता है, परंतु जब अतार्मुखी वृत्ति ध्यान द्वारा ठहर जाता है तब आत्मानुभव और परमात्म दर्शन होने लगता है।

एकान्त एक आसन में बैठकर अन्तर मन से श्रद्धापूर्वक ओम् प्रणव को प्राण के समान बोध करते हुए

शेष पृष्ठ.....६

thearyasamaj.org

पं. नेहरू ने मालवीय जी की जन्म शताब्दी पर यह श्रद्धांजलि दी थी-जो आज भी मननीय व ग्रहणीय है

किसी गज से नापिए बड़ा ही पाएंगे

पं.जवाहर लाल नेहरू

[महामना मदन मोहन मालवीय को मरणोपरान्त अति विलम्ब से ही सही भारतसरकार द्वारा ३० मार्च को भारत रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया महामना मदन मोहन मालवीय जी को यह सम्मान सबसे पहले ही दिया जाना चाहिए था। परन्तु विलम्ब से ही सही भारत सरकार इसके लिए प्रशंसनीय है] मालवीय जी की जन्म शताब्दी वर्ष पर पं. जवाहरलाल नेहरू ने बड़ी मार्मिक और भावभीनी श्रद्धांजलि दी थी-वह आज भी चिन्तनीय व अनुकरणीय है अतः उन्हें भारत रत्न सम्मान से सम्मानित करने के अवसर पर भी उद्धृतकर रहा हूँ-सम्पदक]

पंण्डित मदनमोहन मालवीय का जन्म २५ दिसम्बर, १८६१ को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के अहिय्यापुर में हुआ था। अब यह मोहल्ला मालवीय नगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। मालवीय जी को बचपन में कविता का बड़ा शौक था। उन्होंने १५,१६ वर्ष की आयु में ही कवि 'मकरन्द' नाम से ख्याति प्राप्त कर ली थी।

कांग्रेस के १८८६ में कलकत्ता अधिवेशन में मालवीय जी प्रथम बार राजनैतिक मंच पर पधारे थे। इसके बाद जीवन पर्यान्त कांग्रेस से जुड़े रहे। १३ अप्रैल, १६१६ को 'जलियाँवाला बाग नरसंहार' पर उन्होंने केन्द्रीय धारा सभा में लगातार छः घंटे तक आजस्वी वाणी में ब्रिटिश क्रूरता के विरूद्ध आवाज उठाई। कांग्रेस द्वारा संचालित आन्दोलनों में उन्होंने जेल यात्रा की। कई बार कांग्रेस के निर्णयों का खुलकर विरोध किया, फिर भी कांग्रेस में वह सम्मानित एवं प्रतिष्ठित स्थान रखते थे। हिन्दुत्ववादी होने के कारण हिन्दु महासभा में भी उनका बड़ा सम्मान था। पं. मदनमोहन मालवीय जी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' है। उन्होंने इसकी स्थापना ४ फरवरी सन् १६१६ को की थी। १६१६ से १६४६ तक वे इसके कुलपति रहे। मालवीय जी की पत्रकारिता जगत में गहरी पैठ थी। उन्होंने १६०७ में 'अभ्युदय' साप्ताहिक पत्र आरम्भ किया। जिसे बाद में दैनिक कर दिया गया। १६१० में 'मर्यादा' मासिक पत्रिका आरम्भ की। किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु १६२१ में 'किसान' पत्र निकाला। अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' की स्थापना भी मालवीय जी ने ही की थी। वह १६२४ से जीवन पर्यन्त 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के निदेशक मंडल के प्रतिष्ठित सदस्य रहे। नौवाखाली में हिन्दुओं के भयंकर रक्त-पात से उन्हें बड़ा मानसिक अघात लगा। इस आघात को वह स न सके। १६४६ में उन्होंने अंतिम श्वांस ली।

महान स्वतंत्रता सेनानी महामना पं. मदन मोहन मालवीय अपनी ही धुन के धनी अद्भुत शख्सियत थे। क्रांतिकारिता की राह में चीजो को बिगाड़ने से ज्यादा वे बनाने पर जोर देते थे। उन्होंने लक्ष्य आधारित काम किया और अद्भुत सफलता भी पाई। उनकी बनाई संस्थाओं ने देश के लोगों की हिम्मत बढ़ाई और उनमें आत्मविश्वास पैदा किया।

मालवीय जी का जन्म दिवस हमारे देश के लिए एक शुभ दिन है। विशेषकर जो प्रयाग नगर के निवासी हैं। आज एक गुजरा हुआ जमाना मेरी आँखों के सामने आता है, जब मैं थोड़ी-बहुत पढ़ाई करके इलाहाबाद वापस आया था। यों तो बहुत बचपन से, मालवीय जी को दूर से मैं देखता रहा हूँ, वैसे ही जैसे बच्चे देखते हैं बड़ों को। वे मुझसे प्रेम करते थे और मैं उनका आदर करता था। फिर एक जमाना गुजरा और मैं बाहर रहा। भारत वापस आया तो बहुत बातों में लग गया। राजनीतिक बातों में भी लगा। उस समय जवानी का जोर था, जोश था। मुझे याद है कि उन दिनों मैं यहां भारतीय भवन में अक्सर उनके पास जाता था। मेरे मन में शंकाएं थीं, परेशानी थी कि क्यों कुछ नहीं होता, लोग ढीले क्यों पड़ जाते हैं ?मैं उनसे पूछता था और वह मुझे समझाते थे। कुछ समझ में भी आता था, फिर भी दिमाग परेशान रहता था। हिन्दुस्तान की हालत कुछ ठीक नहीं मालूम होती थी। ठीक थी भी नहीं। विशेषकर मुझे वे दिन याद हैं जब मैं शुरू-शुरू में उनके पास जाता था कभी अकेला, कभी किसी और के साथ। उनसे यहां का कुछ राजनीतिक हाल जानने की कोशिश करता था। फिर मैं स्वयं इन बातों में पड़ा और उनसे मिलने के अनेक अवसर मिले। फिर दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई का जमाना आया। हमारे यहां का राजनीतिक काम और ठंडा हो गया, क्योंकि दुनिया की लड़ाई चल रही थी। कुछ ध्यान उधर जाता था कि दुनिया का अब क्या होगा। इस लड़ाइ दारान के कुछ नई-नई बातें हुई और फिर से हल्के-हल्के हिन्दुस्तान उठा और हवा बदलने लगी। शायद बाज लोगों को याद हो वह जमाना, जब लोकमान्य तिलक ने एक होमरूल लीग शुरू की थी और एक श्रीमती एनी बेसेंट ने। हमारी संस्था कांग्रेस भी, जिसके सबसे पुराने और बड़े नेता मालवीय जी थे, कुछ जागने लगी थी।

लड़ाई खत्म हुई और दूसरी बातें सामने आई। थोड़े ही दिनों बाद पंजाब का हत्याकांड हुआ। मार्श-लॉ बगैरा का जमाना और, उसमें मालवीय जी का एक बहुत बड़ा हिस्सा रहा यानी उसकी तहकीकात में, जांच-पड़ताल में और उनकी सहायता करने में। उस समय उनके साथ मुझे बहुत काम करने का मौका मिला। लाहौर में, पंजाब में, अमृतसर में कुछ शिमला में भी, जहां उस समय पुरानी इंपीरियल कौंसिल की मीटिंग होती थी। मालवीय जी को तो बहुत दिनों से जानता था। यहां पास से बहुत कुछ जानने को मौका मिला। उन्होंने हमेशा बहुत प्रेम से मुझे बातें बतलाई, समझाई। कभी-कभी मैंने उनसे बहस करने की भी जुर्रत की। उसको भी उन्होंने प्रेम से समझाने की कोशिश की। उसका एक जबरदस्त असर होता था चाहे कोई उनकी किसी बात से सहमत हो या न हो। उसके बाद असहयोग आंदोलन शुरू हुआ और गांधीजी मैदान में आए। लेकिन इस सारे जमाने में भी मालवीय जी का असर महज इलाहाबाद पर ही नहीं, सारे भारत की राजनीति पर बहुत जबरदस्त रहा।

कभी-कभी हम, उस समय के नौजवान, बावजूद उनके प्रति अपनी मुहब्बत के, उनस कुछ शिकायत करत थे। हमारी राय में उस वक्त वह धीमे चलते थे। यह तो हमारी, क्या कहूं, अपनी जवानी का एक जोश था कि हम समझते थे कि जो हमारी बात को पूरी तरह से मंजूर न करे, वह धीमा है। खैर, कांग्रेस जब से शुरू हुई, वह हमारी राजनीतिक आन्दोलन की खास निशानी रहे हैं। उसे शुरू करने में, बनाने और बढ़ाने में मालवीय जी का एक बहुत बड़ा हिस्सा रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि समय की हवा देखकर भारतीय राजनीति में मालवीय जी अगुआ भी रहे और एक कड़ी भी रहे जोड़ने की उन लोगों को, जो कांग्रेस में आगे-पीछे गिने जाते थे, यानी गरम नरम दल दोनों को। उनका स्वभाव ही बहुत विरोध करने का नहीं था। यह तो एक बहुत ऊँचे दर्जे की बात है कि वह अपनी राय पक्की रखते हुए भी मिलकर रहते थे और दूसरी को मिलाने की कोशिश करते थे।

फिर वह जमाना आया जब उनसे अक्सर ही मेरा मिलना-जुलना होता रहा। इस तरह की सब तस्वीरें आज हमारे सामने आती हैं और मैं देखता हूँ कि इन सब वर्षो में उनका कितना बड़ा हाथ रहा अपनी राजनीति को ढालने में। यह तो हुई हमारी राजनीति की बात, जो अपने में खुद ही बड़ी बात है। दूसरी बड़ी बात थी उनका हमारी पुरानी संस्कृति के प्रति खास झुकाव। उसको बढ़ाने की वह हर वक्त कोशिश करते थे और उसकी निशानियां तो आपको हर जगह मिलेंगी। उस समय की हालत कुछ ऐसी थी। वह जो बातें कहते थे, वे मेरी राय में बहुत सही थीं। लेकिन, उन पर बहसें हुई और वे बहसें अब तक जारी हैं, कभी भाषा के मामले में, कभी कुछ और मामलों में। लेकिन मालवीय जी किसी भाषा के विरोधी नहीं थे। वह चाहते थे कि हिन्दी और संस्कृत की यहां तरक्की हो भारत में, और यह एक बहुत ठीक बात थी। वह जो बात करने की कोशिश करते थे, बिना किसी का विरोध किए हुए। विरोध करने का सवाल ही नहीं है। विद्या और इल्म का विरोध नहीं होता, बल्कि वह तो एक धन-दौलत है जो हमको ऊँचा करती है और जितनी ही वह अधिक हो, उतना ही अच्छा।

उस समय के हमारे जो राजनीतिक नेता थे वे तरह-तरह के थे। यह जमाना ऐसा था कि हमारे देश में काफी बड़े आदमी हुए। उनमें से अधिकतर कांग्रेस की ओर खिंचे। कुछ बाहर से रहे। हर तरह के लोग थे ओर वे एक से नहीं थे। अलग-अलग उनकी बातें थीं, अलग-अलग मजमून थे। लेकिन उस समय के उन बड़े नेताओं में प्राचीन संस्कृति

शेष पृष्ठ.....५

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....४ का शेष

की ओर सबसे अधिक ध्यान मालवीय जी का रहा। यह एक अच्छी बात थी। यों भी अच्छी होती, लेकिन उस समय की स्थिति-विशेष में तो वह बहुत ही अच्छी थी, क्योंकि देश कुछ भटक रहा था। पहली बात तो यह कि हमारे लोगों में, बड़े-छोटे सभी में, अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों की एक नई जाति-सी कायम हो रही थी। हालांकि राजनीतिक जीवन में हम अंग्रेजी हुकूमत का मुकाबला करते थे, वह रोज-ब-रोज सख्त होता जाता था। लेकिन अंग्रेजी, संस्कृति क्या अंग्रेजियत का, उस जमाने के हमारे नेताओं पर ज्यादा असर था। यह आश्चर्य की बात नहीं है। ऐसा तो होना ही था और देशों में भी ऐसा ही हुआ। खास अंग्रेजी ही नहीं, सारे यूरोप में एक नया ढंग निकला था और उसके पीछे था नया जमाना इंडस्ट्रीज का, कारखाने का, विज्ञान का। उसे अपनाने की हम कोशिश करते थे। लेकिन इसके अलावा भी ऊपरी चीजें हैं। थोड़े बड़े आदमी बड़ी बातों को देखते थे। और अन्य लोग तो छोटी बातों को ही देखते थे। मैं अंग्रेजियत की बात कर रहा हूं। तो मालवीय जी ने कोई विरोध इन बातों का भी नहीं किया था। हां, अपना सारा वजन उन्होंने हिंदुस्तानियत पर, भारतीयता पर डाला उस समय भी बहुत सारे लोग थे, बड़े विद्वान लोग थे, संस्कृति के बड़े पंडित लोग भी थे, पर जहां तक मेरा विचार है, राजनीतिक नेताओं में, बड़े नेताओं में मालवीय जी ही शायद इस मामले में सबसे आगे थे। वे रोकते थे अंग्रेजियत की बाढ़ को, पर विरोध करके नहीं, बल्कि अपने काम से, अपने विचारों से और कोशिश करते थे अपनी संस्कृति को बढ़ाने की।

इस सिलसिले में उनका सबसे बड़ा काम हुआ ''हिंदू विश्वविद्यालय'' की स्थापना। यह बड़ी भारी बात थी। विश्वविद्यालय के सामने उद्देश्य था, लक्ष्य था, आजकल के जमाने के विज्ञान और विज्ञान की औलाद यानी टेक्नोलॉजी, इंडस्ट्री वगैरह को पुरानी भारतीय संस्कृति के साथ जोड़ना। एक मानी में यह सबसे बड़ा काम था भारत के लिए। अब भी है, क्योंकि यह एक-दो रोज का काम तो नहीं है। एक तरफ पुरानी भारतीय संस्कृति है जिसको हमें अच्छी तरह समझना चाहिए। आखिर हम लोग उसी में ढले हैं और भारत इन सैकड़ों-हजारों वर्षो से उनके साये में फैला है। उसका असर हमारे रगोरेशे में है। उसमें कुछ खराबियों पैदा हुई। पुरानी संस्कृति में नहीं, उसके बदलते हुए ढंग में। सब पुराने लोगों में, सभी पुरानी कौमों में ये बातें आ जाती हैं। लेकिन जो चीज असली उसमें थी, वह खरा सोना था। भारत के लिए उसे भूल जाना एक तरह से अपने को भूल जाना है, क्योंकि उसी मिट्टी में हम पैदा हुए और उसी से बने। उसे भूल जाएं तो हमारी कोई जड़ ही नहीं रहती, जो बहुत आवश्यक बात है। लेकिन उसी के साथ उतनी ही आवश्यक बात यह है कि हम आजकल की दुनिया को समझें। आजकल की दुनिया विज्ञान की है, अगर हम उसको नहीं समझते तो हम पिछड़ जाते हैं।

उसको न समझने से हमारी आजादी चली गई। आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम उसको समझकर अपने देश की आर्थिक स्थिति को बढ़ाएं और उसे और अच्छा करें। यदि आप इन दोनों पहलुओं को देखें तो हमारे देश के लिए दोनों ही आवश्यक हैं। उसमें एक खाली हो और नहीं तो हम नहीं चल सकते, बढ़ नहीं सकते। अगर पहली बात न हो, यानी हम अपना पुराना जमाना भूल जाएं, तो जैसा मैंने आपसे कहा, हम बेजड़ के हो जाते हैं, हम एक नकली लोग रह जाते हैं। नकल करके कोई कौम बहुत बढ़ती नहीं, और बातों को हर कौम को सीखना है। कौमों के दरख्त कलम करके बहुत नहीं बढ़ते, साथ ही अगर हम खाली इसी बात पर विचार करें और आजकल की दुनिया, आजकल के विज्ञान वगैरह को न समझें, तो हम आज की दुनिया में खप नहीं सकते, दुर्बल रहते हैं, कमजोर हो जाते हैं, अपनी आजादी को कायम नहीं रख सकते, अपने को खुशहाल नहीं बन सकते। क्योंकि दुनिया है विज्ञान की और विज्ञान सारे ज्ञान का एक हिस्सा है। विज्ञान ने आदमी को बड़ी-बड़ी शक्तियां दी हैं दी क्या हैं, ये शक्तियां तो प्रकृति की हैं, लेकिन विज्ञान प्रकृति को अपनाना है और इससे उसकी ताकत बढ़ जाती है। इसलिए दोनों ही पहलू भारत को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं।

मालवीय जी के सामने दोनों बातें थीं। बनारस विश्वविद्यालय के सामने उन्होंने दोनों लक्ष्य रखे, वही सवाल हम सबके सामने आज भी है। इन दोनों पहियों पर हिन्दुस्तान की गाड़ी तेजी से आगे चली। आज के नौजवान शिकायत करते हैं धीमी चाल की, जैसे हम नौज़वान शिकायत करते थे कि ये पुराने लोग ढीले-ढाले हो जाते हैं। उतनी हिम्मत नहीं है ज़ितनी हिम्मत हममें है। हर जमाने में अपनी जवानी में लोग ऐसा ही समझते हैं। अगर आप उन लोगों के व्याख्यान पढ़ें, जिन्होंने कांग्रेस शुरू की थी चाहे दादाभाई नौरोजी के या जो बड़े आदमी हुए या मालवीय जी के कुछ आश्चर्य होता है कि धीमी आवाज से भाषण दिया करते थे ये लोग! पर लोग भूल जाते हैं कि वह समय क्या था, आबोहवा क्या थी, जिसको बदलने की कोशिश हो रही थी। एक समय जो क्रांति हो, क्रांति के पीछे आवाज हो, कुछ दिनों बाद वह क्रांति मामूली बात हो जाती है और आवाज धीमी लगने लगती है। उसकी जांच करने के लिए हमें देखना होता है कि उस समय के हालत क्या थे, तभी हम सही अंदाजा कर सकते हैं। इस नक्शे को देखें फिर आप महसूस करें कि मालवीय जी ने कैसा नेतृत्व किया देश का, कैसे वे अगुवा थे हमारे राजनीतिक आंदोलन के। उस वक्त हम शिकायत करते थे कि वे ढीले पड़ जाते थे, अब लोग मेरी शिकायत करते हैं कि मैं ढीला पर जाता हूँ। अब तो मुझे खुद अनुभव हुआ है इस बात का, और अब मेरा अनुभव सही है। हो सकता है मेरे बारे में शिकायत सही हो। लेकिन मेरा मतलब यह है कि अगर मुमकिन हो तो आप जरा समझें उस जमाने की हवा को, अपने सामने उस जमाने के भारत का एक चित्र लाएं और फिर समझें कि उसमें क्या हो सकता था, और क्या हुआ। तब आप हमारे पुराने जो नेता थे, जिन्होंने इस देश की राजनीति को ढाला, कांग्रेस को बनाया, जैसा कुछ वह बाद में बनी, इसका अंदाज कर सकते हैं और उनका आदर कर सकते हैं। मेरा विचार है कि कांग्रेस के पुराने नेताओं को जिनमें बहुत ही बड़ों में पूज्य मालवीय जी थे, दुनिया के किसी गज से भी नापें, बहुत बड़ा पाएंगे।

वे बहुत बड़े आदमी थे जिन्होंने हिन्दुस्तान की ऐसे मोके से निकाला, वे बहुत बड़े अपने बलिदान की शक्ति में। आजकल के नौजवान बहुत-कुछ सीख सकते हैं मालवीय जी के जीवन से। उनके सामने जो लक्ष्य था, जैसे उन्होंने काम किया और सफलता पाई।

हम मूर्तियां खड़ी करें संस्थाएं बनाएं, यह तो ठीक है, लेकिन आखिर में सबक सीखें उनकी जिन्दगी से, और सीखकर उसी रास्ते पर चलें, आज के जमाने में यही उनका सबसे बड़ा स्मारक हो सकता है। यह अच्छा है कि समय आया उनकी शताब्दी मनाने का। तो पुराने और नए लोग सब फिर सोचें, विचार करें और सीखें कि वे क्या-क्या बातें थीं, जिनसे मालवीय जी इतने ऊँचे महापुरुष हुए, कैसे उन्होंने भारत की आजादी के रास्ते में, अपनी संस्कृति का आदर करने के रास्ते में सबको बढ़ाया। और नई पीढ़ी को यह संदेश दें कि उनके बतलाए रास्ते पर चलकर भारत की सेवा हम किस तरह करें और आगे बढ़ें।

●●●

स्थापना दिवस प्रतिज्ञा

डॉ. बी.पी.सागर
अंतरंग सदस्य
आ.प्र.स, उ.प्र., लखनऊ

धन बल प्यारे सदा न रहता
केवल सत्य प्रेम का कर दरकार
ओ३म् नाम ही सत्य का द्योतक,
कर अधर्म हृदय से दर किनार।।
कितने राजा 'रंक' बने हैं
पढ़ इतिहास जान जायेगा,
रंक परमेश्वर के भक्त बन जाते
चित्त एकाग्र कर दरश पायेगा,
माया महर्षि से दूर भी रहती
दिया संदेश बन साकार।
ओ३म् नाम ही.....
लो संकल्प स्थापना दिवस पर
सात्विक मानव, बनना है हमको
सार्थक हो जायेगा जीवन तेरा
यही दयानन्दी संदेश जगत को,
कदापि न विचलित होगा सागर,
लहर स्वयं है सत्य की धार।
ओ३म् नाम ही.....।

-मंत्री आर्य समाज
रानीमण्डी अतरसुइया,
इलाहाबाद

thearyasamaj.org

१८५५-१८५६-१८५७ स्वतन्त्रता संग्राम के ३ वर्ष विद्रोह की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने का श्रेय सर्वश्री पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द १६० वर्ष, उनके शिष्य पूर्णानन्द ११० वर्ष उनके शिष्य स्वामी विरजानन्द, ७९ वर्ष उनके शिष्य स्वामी दयानन्द को पंचायतों के रिकार्ड के आधार पर स्वतन्त्रता आन्दोलन

-हरिश्चन्द्र आर्य
अमरोहा, मुरादाबाद

सर्व खाप पंचायत सोरम के रिकार्ड के अनुसार पहली सभा सन् १८५५ के प्रारंभकाल में हरिद्वार में हुई थी जिसमें बहादुर जफर का पुत्र फिरोज शाह, राय साहब मराठा (संभवतः नाना साहब) बाबा साहब मराठा रंगू बापू अजीमुल्ला खां रमजान वेग मुख्य रूप से उपस्थित थे कुल उपस्थिति १५०० के लगभग थी। ब्रिटिश सरकार के हिन्दुस्तानी सैनिकों में विद्रोही की भावना का प्रसार करने के लिए कमल के फूल चपाती के वितरण की योजना इसी सभा में पूज्य स्वामी ओमानन्द जी द्वारा तैयार की गई-दूसरी सभा ५ अक्टूबर १८५५ को गढ़ गंगा के मेले के अवसर पर मेले के क्षेत्र से कुछ दूरी पर आयोजित की गई। स्वामी पूर्णानन्द इस सभा के प्रधान थे और साई फखरूद्दीन उप प्रधान + फखरूद्दीन पीरान कलियर (हरिद्वार और रूड़की के बीच में स्थित एक मुस्लिम धर्म स्थान) रहा करते थे और हिन्दू सन्त महात्माओं से उनका अच्छा मेल जोल था। गढ़ गंगा की सभा की उपस्थिति २५०० के लगभग थी। सभा में स्वामी पूर्णानन्द जी ने जो भाषण दिया था। मौलवी जहीर अहमद ने इसका सार इस प्रकार लिखा है-

''मुल्क को फिरंगी के भरोसे मत छोड़ो वे बेदीन हैं इनका कोई कौल फेल नहीं है यह राजा नहीं बल्कि तिजारती लुटेरे और जरपरस्त हैं। ये हमारे मुल्क की तमाम मखलूक के हर इंसान की जिन्दगी के दुश्मन हैं और ये तुम्हारा खून और गोश्त खा जायेगें इनसे बचो-ये तुम्हारी नस्लों को नेस्तनाबूद कर देगें और हमारे मुल्क में खुद आबाद होकर रहेगें इन्हें अपने मुल्क से निकालो।''

तीसरी सभा दस दिन बाद ११ अक्टूबर १८५५ को हरिद्वार के पहाड़ में की गई थी इसे भी स्वामी पूर्णानन्द जी ने आयोजित किया था। इसमें ५६५ साधु उपस्थित थे जिसमें १६५ मुसलमान साधु थे मौलवी जहीर अहमद इस सभा में सम्मिलित हुए कुछ प्रमुख साधुओं के नाम भी दिये हैं जिनमें प्रज्ञाचक्षु, स्वामी विरजानन्द का नाम भी है और साथ ही गोल मुख वाले नौजवान दयानन्द का भी नाम है सभा में स्वामी पूर्णानन्द सांई फखरूद्दीन ने भाषण दिये थे और लोगों को देश के उत्थान और स्वतंत्रता की प्रेरणा दी थी।

स्वामी पूर्णानन्द जी का निवास कनखल हरिद्वार में था और वे अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान एवं सन्त थे उन्हें पूर्णदास सन्त भी कहते थे उनकी आयु सन् १८५७ में ११० वर्ष की थी और सर्व खांप पंचायत के रिकार्ड के अनुसार अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की योजना तैयार करने में उनका प्रमुख कर्तव्य था संभवतः यह कल्पना असंगत नहीं है कि माई सूर के सैनिक कमीशन के सम्मुख गवाही देते हुए सीताराम बाबा ने जिसे दस्सा बाबा कहा है वे स्वामी पूर्णानन्द ही थे। शुरू में अपने गुरू स्वामी ओमानन्दजी महाराज के साथ मिलकर अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध विद्रोह की योजना बनायी थी और जब पूज्य ओमानन्द अत्यन्त बृद्ध (१६० वर्ष के) हो गये तो वे ही नाना साहब आदि का मार्ग दिखाते रहे।

सन् १८५५ में कुम्भ के अवसर पर स्वामी दयानन्द जी उनसे मिले थे और सन्यास दीक्षा ली थी और उनसे विद्या पढ़ने की इच्छा प्रगट की थी पूर्णानन्द जी वृद्ध थे अतः उन्होंने दयानन्द से कहा था कि स्वामी विरजानन्द जी के पास जाकर विद्या अध्ययन करें पर साथ ही यह भी कहा था कि विद्या पढ़ने से पहले देशके सुधार तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कार्य में जी जान से जुट जाओं। भारतवर्ष की छोटी बड़ी सभी रियासतों को संगठित कर स्वतन्त्रता का शंखनाद करें। इसके बाद स्वाधीनता संग्राम के लिए जो सभाएं हुई दयानन्द उसमें सम्मिलित होते रहे संवत १६१३ सन् १६५६ में जिस सभा में मीर मीरासी द्वारा लिखित विवरण दिया गया है। स्वामी दयानन्द उसमें स्वयं उपस्थित थे।

मीर मीरासी की रिपोर्ट

सन् १८५६ सं० १६१३ को एक पंचायत मथुरा के तीर्थग्रह पर मुनक्किद हुई उसमें हिन्दू मुसलमान और दूसरे मजहब के लोगों ने शिरकत की थी इस पंचायत में एक नाबीना हिन्दु दर्वेश को लाया गया था एक पालकी में बैठाकर उनके आने पर सब लोगों ने उनका अदब किया जब वह एक चौकीं पर बैठ गये तब हिन्दू मुसलमान फकीरों ने उनकी कदम बोसी की। इसके बाद सब पंचायती लोगों ने इनका अदब किया- सबके अदब के साथ नाना साहब पेश हुए - मौलवी अजीमुल्ला खान, रंग बापू और शहनशाह बहादुरशाह का शहजादा इन सबने अदब में आकर अशरफियां पेश की। इसके बाद एक हिन्दू एक मुसलमान फकीर ने कहा कि हमारे आका की जुबानें मुबारक से जो तकरीर होगी उसे तसल्ली के साथ सब लोग सुनें और वह इस मुल्क के लिए बहुत साबित होगी और यह वली उल्लाह साधु बहुत बहुत जबानों का आलिम और हमारा और हमारे मुल्क का बुजुर्ग है। खुदा की मेंहरबानी से ऐसे बुजुर्ग हमें मिले हैं यह खुदा का हम पर बड़ा एहसान है।

दर्वेश की तकरीर का आगाज- सबसे पहले उन्होंने खुदा की तारीफ की फिर उर्दू में उसका तर्जुमा किया इस बुजुर्ग ने यह कहा था कि आजादी जन्नत और गुलामी दोजख है अपने मुल्क की हुकूमत गैर मुल्की हुकूमत के मुकाबले में हजार दर्जा बेहतर है दूसरों की गुलामी हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का बाईस है हमें किसी कौम से किसी मुल्क से कोई नफरत नहीं है हम तो खल्के खुदा की बहबूदी के लिए खुदा से दुआ मांगते हैं मगर हुक्मरान कौम खासकर फिरंगी जिस मुल्क में हुकूमत करते हैं उस मुल्क के वाशिन्दों के साथ इन्सानियत का वर्ताव नहीं करते और कितनी भी अपनी अच्छाईयों की तारीफ करें मगर उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ मवेशियों से गिरा हुआ बर्ताव करते हैं। खुदा की खलकत में सब इंसान भाई-भाई हैं मगर गैर मुलकी हुकमत उन्हें भाई समझकर गुलाम समझते है किसी भी मजहबी किताब में ऐसा हुक्म नहीं है कि अशरफुल मखलूकात के साथ दगा की जाये अल्लाह के हुक्म की खिलाफ वर्जी की जाये इस वास्ते इन लोगों का न कोई ईमान है और न उनकी शान है फिरगियों में बहुत सी अच्छी बातें भी हैं मगर सियासी मामले में आकर वह अपने फेल बेजा को न समझकर फौरन बदल जाते हैं और हमारी अच्छाई और नेक सिलावी फौरन ठुकरा देते हैं इसकी असल वजूहात यह है कि हमारे मुल्क को अपना वतन नहीं समझते यही सब कमी का वाइस है।

हमारे मुल्क का बच्चा-बच्चा उनकी खैर ख्वाही का दम भरे फिर भी वह अपने वतन के कुत्तों को हमारे इन्सानों से अच्छा समझते हैं यही सब कमी का वाईस है - उन्हें अपने ही वतन से मुहब्बत है इसलिए हम सब वाशिन्दगाने हिन्द से इल्तिजा करते हैं कि जितना वह अपने मजहब से मुहब्बत करते हैं उतना ही इस मुल्क के हर इंसान का फर्ज है कि वह वतन परस्त बने और मुल्क के हर बाशिन्दे को भाई-भाई जैसी मुहब्बत करे जब तुम्हारे दिलों में वतन परस्ती आ जायेगी हिन्द के रहने वाले सब आपस में हिन्द भाई हैं और बहादुर शाह शहनशाह है।

सन् १८५६ में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह की तैयारियां तेजी के साथ हो रही थी स्वामी विरजानन्द भी उसी के लिए कार्य कर रहे थे इसी सिलसिले में वह सर्व खांप पंचायत में आये थे उनके व्याख्यान से लोगों में उत्साह का संचार हो गया। और बहुत से युवक अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई के लिए सेना में भरती होने को तैयार हो गये बहुत सी युवतियों ने भी स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए अपनी सेवा अर्पित की थी। सर्वखांप पंचायत के रिकार्ड में उन युवतियों के नाम भी सुरक्षित हैं।

पृष्ठ............३ का शेष

उसके तरफ ध्यान किया जाता है तब मन की वृत्तियां भी उसी की ओर एक होकर मन के साथ हो जाती है। उस अवस्था में जैसे प्रेमी अपनी प्रेमिका के ध्यान में डूबा रहता है, जैसे विद्यार्थी अपने विद्याध्ययन में लगा रहता है जैसे लेखक कोई नये लेख के लिखने में वह रमा रहता है, उस समय उन तीनों के सामने कौन आया और कौन गया कब क्या दिया गया कौन क्या कर रहा था कुछ भी भान नहीं होता। वैसे ही योग करने वाले का जब स्व स्वरूप के साथ हृदय या भृकुटी में अपने इष्टदेव को जानने की इच्छा से ध्यान एक हो जाता है तब मन के साथ प्राण भी एक होने लगता है (क्योंकि प्राण से मन का सम्बन्ध है) फिर कुछ दिन के अभ्यास से अपने आत्मा का स्वरूप प्रकाश के रूप में (उस अवस्था में) दिखने लगता है। इस योग क्रिया से अनेक लाभ होते हैं। प्रथम तो योग करने वाले का मन शिव संकल्प वाला हो जाता है। उसकी वाणी आकर्षणीय हो जाती है और परमात्मा की कृपा से 'असतो मा सद्गमय', तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योंमाअमृतंगमय' की ओर जाने लगता है।

योगाभ्सास करने के पहले-सर्वप्रथम दीर्घास्वासन १० बार लम्बा श्वांस ले और छोड़े। उसके पश्चात् कपालभाति (लोहार की धोकनी की तरह) २५ या ५० बार करें। उसके एक मिनट बाद 'अनुलोम विलोम' (नाड़ी शोधन प्राणायाम) १५ से २० बार करें। यह सभी प्राणायाम यथाशक्ति करें। उसके पश्चात् रेचक पूरक और कुम्भक प्राणायाम में प्रथम रेचक प्राणायाम को सिद्ध करें, मूलेन्द्रिय को खींचकर रखें, वायु को बल से बाहर फेंककर बाहर ही रोके, जब स्वांस लेना चाहे तो वेग से वायु को बाहर निकाल दें, पुनरपि वैसे ही करें। (साथ ही प्राणायाम मत्रों का जप करते रहें।) ध्यान को हृदय अथवा भृकुटी में स्थिर करें। इस प्रकार रेचक का कुम्भक का प्राणायाम तीन बार करें। इन क्रियाओं से ऊर्जा की प्राप्ति, बुद्धि का विकास और मन तथा शरीर पवित्र हो जाता है। (परंतु जिस दिन उदर ठीक न रहे, गैस रहे उस दिन रेचक प्राणायाम न करें योग एवं सारे प्राणायाम के अंत में ५ बार भ्रामरी अवश्य करें।)

हमारे आचार्य जी संध्या योग रहस्य में लिखते हैं कि संध्या के माध्यम से परमात्मा में चित्त वृत्ति को लगाने के लिए सर्वप्रथम ३ प्राणायाम करने चाहिए जो प्राणायाम बिना मंत्र जप के साथ होता है। उससे शारीरिक लाभ तो होता है परंतु मन को ध्यान के लिए कोई आधार प्राप्त नहीं होता। अतः इस प्राणायाम के समय मन को ओम मंत्र के जप में नियुक्त करना चाहिए अतः इन तीनों प्राणायाम में मन से ओम भू, ओम् भुवः, ओम् स्वः, ओम महः, ओम् जनः, ओम् तपः ओम् सत्यम् का जप करते रहना चाहिए, यही मन को ध्यान में प्रवृत्त करने के लिए पहला पाठ है।'

ओम प्रणव सर्वरक्षक है। परमात्मा प्राणों का भी प्राण है। उससे हमारा प्राण संबंधित है, अतः मैं परमात्मा के प्राण से प्राणवान हो रहा हूँ। मेरे दुख उसकी भुवः शक्ति से दूर होते हैं, मुझे आनन्द का प्रवाह उसी आनन्द स्वरूप से आ रहा है। ऐसे प्रभु का हम वरण करके उसके मर्म को धारण करने से हमें उसका शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है। वह हमारा गुरू है क्योंकि वह समस्त ज्ञान विज्ञान का भंडार है वह आचार्य है हमें वह शुभगुण, कर्म स्वभाव युक्त आचार प्रदान कर अपनी कृपा बरसायेगा। इसी प्रकार की भावना करें।

नित्य प्रातः प्राणायाम की वृद्धि करते रहने से प्राण दीर्घ और सूक्ष्म होता रहता है, साथ ही मन का मैल साफ होने लगता है, इसका फल यह होता है कि 'ध्यानं निर्विष्यमनः' ध्यान में मन विषयों से हटकर अपने किसी श्रद्धा के लक्ष्य पर एकाग्र होने लगता है। मन का प्राण से सम्बन्ध होने से मन गायत्री मंत्र के जप से भी एकाग्र होने लगता है और इस एकाग्रता के प्रभाव से प्राण का भी स्तवन होने लगता है और तब उनके योग से आध्यात्मिक प्रकाश का आनन्द योगी को प्राप्त होने लगता है। यह सब आध्यात्मिक योग का बहुत कठिन मार्ग हैं।

मु.पो.-मुरारई जिला-वीरभूम (प.बंगाल)

thearyasamaj.org

''मानव! जियो छन्दमय जीवन''

-देवनारायण भारद्वाज

संसृति अर्थात संसार जो सदैव सरकता रहता है, रूकता नहीं, वह एक काव्य या लय के साथ आगे बढ़ता रहता है। सागर-सरिता के किनारे निकल जाइए तो उनकी लहरें एक ध्वनि-संगीत छेंड़ती चलती हैं, उद्यान में निकल जाइए तो वृक्षों के पत्ते हवा की तरंगों से मिलकर एक गीत गुंजित करते मिलते हैं, पौधों के पुष्पों पर रंग-बिरंगी तितलियाँ एवं भ्रमर अपने गुंजन के साथ नृत्य करते दिखाई देते हैं। आज के अतीव कष्ट कर पर्यावरण के प्रदूषण के बाद भी अनेक स्थलों पर प्रातः - सायं पक्षियों के समूह कलरव-कीर्तन करते मिलते है। वेद भगवान बोल पड़ते हैं :-

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। (अथर्व० १०.८.३२)

मनुष्य परमेश प्रभु को कभी त्याग नहीं सकता, क्यों कि वह उसके घनिष्ठ सम्बन्ध से जुड़ा - सन्निकट है - यहाँ तक कि वह उसके आत्मा में ही व्याप्त है, पर आश्चर्य यह है कि मनुष्य उसकी ओर देखता नहीं। जो आत्मानुभूति कर लेते हैं वे तो बधाई के पात्र हैं, किन्तु जो अपनी प्रत्यक्ष आँखों से ही देखना चाहते हैं, वे उसकी सृष्टि रूपी काव्य को देख लें। गुणों का आभास करके गुणी के साथ प्रवास किया जा सकता है। मनुष्यकृत नाटक एक दो बार देखने पर ही पुराना पड़ जाता है, किन्तु यह ईश्वरीय काव्य कभी पुराना नहीं पड़ता ओर कभी मरता भी नहीं, और न जीर्ण-शीर्ण होता है। हे मनुष्य ! तू ईश्वर के वेद काव्य और इसी के आधार पर निर्मित सृष्टि काव्य को देखता हुआ - इसी में सृष्टिकर्ता परमेश्वर के दर्शन किया कर। 'वैदिक विनय' में आचार्य अभयदेव विद्यालंकार ने कुछ ऐसा ही दिग्दर्शन कराया है। जब यह संसार व जीवन प्रभु का एक काव्य है तो इसमें कोई लय व छन्द होना चाहिये। इसका संकेत हमें वेद मन्त्र से मिलता है :-

छन्दांसि यज्ञे मरुतः स्वाहा मातेव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः।। (अथर्ववेद- ५.२६.५)

सृष्टि काव्य का अनुगमन करते हुए हम जीवन को यज्ञ बनायें अर्थात प्रभु, प्रजा व प्रकृति का पूजन अर्थात् समन्वय व उपयोग करना सीखें, साथ ही बड़ों से सम्मान का व छोटों से स्नेह का संगतीकरण करते हुए अपने द्वारा कमाई सम्पदा का कुछ अंश परहित अर्थात दान में लगाने वाले बनें। अपनी प्राण ऊर्जा को राष्ट्रहित में आहुत करते हुए अपनी पूर्णता या सफलता इस बात में समझें जिस प्रकार कोई माता पुत्र का पालन व पूर्ण करती है। यह प्रक्रिया दोनों ओर से चलती है अर्थात माता से पुत्र की ओर और पुत्र से माता की ओर। जिन दिनों ये पंक्तियाँ अंकित की जा रही हैं, उन दिनों अमर शहीद पं० राम प्रसाद बिस्मिल के बलिदान के समारोह मनाये जा रहे हैं। उन्होंने अपनी योजस्वी कविता में यही भाव भर दिये थे। यथा -

खेलने दो आज नाव कल कर पतवार गहे न गहे।
जीवन सरिता में शायद फिर ऐसी रसधार बहे न बहे।
अन्तिम साँस निकलने तक, बिस्मिल की अभिलाष यही,
तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहे।।

प्रजा-पुत्र अपनी मातृभूमि से जीवन प्राप्त करते हैं तो उस मातृभूमि के स्वाभिमान की रक्षा के लिए काव्य व गीत गाते हुए बलिदान होने को उद्यत हो उठते हैं। उत्सर्ग की कठोर भावना की ओर अधिक न बहते हुए सृष्टि सृजन के मनोहारी काव्य की ओर वापिस लौटते हैं। राजा भोज सृष्टि व काव्य दोनों के प्रेमी थे। वे सृष्टि में काव्य और काव्य में सृष्टि का अवलोकन कर हर्षित हुआ करते थे।

इस सम्बन्ध में कोई कवि उनके दरबार में काव्य पाठ किया करता था, तो उसे एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का पुरस्कार दिया करते थे। सृष्टि के दृश्यों को देखते हुए चार मित्र अपनी एक-एक पंक्ति बनाकर दरबार में पहुँच गये। उन्होंने जैसा देखा वैसा ही राजा के सामने बोल दिया। एक ने अपनी पंक्ति सुनाई - ''रहैटा घनर-घनर घन्नाय'' दूसरे ने बोला - ''कोल्हू का बैल खड़ा भूसा खाय'' तीसरे ने सुनाया - ''तरकस बाँधे तरकस बन्द'' तभी चौथे ने अपनी काव्य पंक्ति ''राजा भोज हैं पूनो के चन्द्र'' सुनाई।

चौथे व्यक्ति की पंक्ति को सुनकर राजा आक्रोषित हो उठे। उन्होंने कहा उपरोक्त तीनों की पंक्तियाँ तो ठीक हैं, उनमें तालमेल है किन्तु चौथे की पंक्ति चाटुकारिता की द्योतक है। इसलिए कविता अपूर्ण रहने के कारण पुरस्कार तो नहीं दिया जायेगा, प्रत्युत दण्ड दिया जायेगा। तभी चौथा काव्यकार बोल उठा, महाराज यह पंक्ति मेरी नहीं है अपितु आपके कवि मंत्री ने बदल दी है, क्योंकि मेरी पंक्ति को वे शोभाजनक नहीं मानते थे और कहते थे इसे सुनाओगे तो राजा रूष्ट होंगे और तुम्हें जेल में पहुँचा देंगे राजा ने आदेश दिया कि अपनी मौलिक पंक्ति सुनाओं। उसने अपनी पंक्ति जोड़कर चारों पंक्तियों इस प्रकार दोहरा दीं -

रहैटा घनर-घनर घन्नाय।
कौल्हू का बैल खड़ा भूसा खाय।
तरकस बाँधे तरकस बन्द।
राजा भोज हैं मूसल चन्द।

यह सुनकर राजा भोज मुस्करा दिये और प्रसन्न होकर वाह-वाह करने लगे और इन मूर्खो को एक लाख के दान की आज्ञा कर दी। राजा के कवि मंत्री ने इन कुपात्रों को दान देने का कारण पूछा तो उन्होंने गम्भीर होकर उत्तर दिया - ''आज तक जो कवि आये, उन्होंने मेरे अभिमान और अज्ञान को ही बढ़ाया, किसी ने मुझे बलि व विक्रम के समान और किसी ने मेरे प्रताप को सूर्य एवं चन्द्र से भी अधिक बढ़ा दिया। किन्तु जिन्हें तुम मूर्ख कहते हो, उन्होंने ठोकर लगाकर मुझे जगा दिया। मैं स्वयं को मूसलचन्द ही समझता हूँ। मूसल धान को कूटता ही रहता है परन्तु उसे चावल का रस नहीं मिलता। मैं संसार रूपी ओखली में कुटाई-पिटाई ही करता रहा, परलोक के लिए मैं कुछ नहीं कर सका। अब मुझे सावधान होना है और आत्मज्ञान को प्राप्त करना है। इन्होंने ठीक ही कहा है कि वीर लोग इस संसार में मृत्यु से मुकाबले के लिए ज्ञान से भरा तरकस बाँधते हैं और अविवेकी विलासीजन कौल्हू के बैल की भाँति खड़े-खड़े भूसा का भोग करते रहते हैं। यह संसार का रहट चक्र चल रहा है। ऊपर की बाल्टियाँ खाली हो जाती हैं, नीचे की भर जाती हैं। फिर वे ऊपर आती हैं और खाली हो जाती हैं। इसी प्रकार आज कोई ऊपर है, अगले क्षण नीचे, आज भरा है कल खाली। सम्पत्ति की ऐसी ही अस्थिर हरियाली है। राजा भोज द्वारा यह निष्कर्ष सुनकर दरबार दंग रह गया। पं० बिहारी लाल शास्त्री काव्य तीर्थ का यह संदर्भ उनके दृष्टांन्त सागर से बूदें लेकर आप तक पहुँचा दिया है।

प्रकृति व परमेश्वर की काव्य-कृतियाँ सर्वत्र बिखरी रहती हैं।
मंत्र - अथर्ववेद (१८.१.१७) यही संकेत कर रहा है।

त्रीणिच्छन्दांसि कवयो वियेतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन भुवन आर्पितानि।।

तत्वदर्शी पुरुष विभिन्न प्रकार यत्न करते और देखते हैं कि अनन्त रूपों में दर्शनीय पदार्थ आनन्द की मर्यादा में रहते हुए जन साधारण के लिये अभिलषित होते हैं। वे तीन पदार्थ जल, वायु तथा औषध हमारे लिए वांछनीय हैं और ये तीनों एक ही भवन में ठहरे रहते हैं और हमें मिलते रहते हैं। इनको छन्द क्यों कहा?इसीलिए कि इनका मर्यादा व अनुशासन में रहकर प्रयोग किया जाय। पीने के लिए जल, श्वाँस लेने के लिए वायु और आहार के लिए अन्न, प्राणीमात्र के लिये जीवनाधार हैं। जैसे - किसी कविता अथवा गीत के छन्द में एक मात्रा भी न्यूनाधिक हो जाती है तो उसका छन्द असन्तुलित होकर कर्ण-कटु हो जाता है वैसे ही इन तीनों पदार्थो का न्यूनाधिक प्रयोग भी शरीर के लिये हॉनिकारक हो जाता है। इतना ही नहीं व्यक्ति आह्लाद के स्थान पर अवसाद में डूब जाता है। वर्तमान विस्तृत प्रीति भोजों में ऐसे ही कुछ दृश्य उपस्थित होते है। जिनमें व्यंजनों की भरमार होती है जो पेट में भर लिये जाते है वायु और जल के लिये पेट में स्थान ही नहीं बचता है। इन पदार्थो के अप मिश्रण की बात तो पृथक है।

जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन, जैसा पिये पानी, वैसी बने वाणी और जैसी हो वायु वैसी हो आयु। छन्द अर्थात मर्यादित आनन्द या सुख के लिये इनके उपभोग का ध्यान रखना आवश्यक है। अपमिश्रण ही नहीं, इनके संग्रहण का स्रोत कितना सात्विक है - यह भी व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है। एक राजा ने एक सन्त को अपने राजमहल में ठहराया। उनका खूब स्वागत सत्कार किया। सन्त उसी स्नानागार में स्नान करते थे जिसमें राजा व रानी भी स्नान करते थे। सन्त राजमहल से विदा हो गये पता चला कि रानी का बहुमूल्य हीरों का हार गायब है। खूब खोजने के बाद भी नहीं मिला। यकायक एक दिन वही सन्त वापस लौटे और राजा का गुम हुआ हार उन्हें पकड़ा दिया। राजा प्रसन्न हुए और बोल पड़े-आश्चर्य! यह हार आपके पास कैसे ? मैंने ही चुराया था यह हार। आपके ऊपर मैं सन्देह कर ही नहीं सकता था, फिर लौटाने क्यों आ गये। राजन् आपने जो अपने राजकोषीय अन्न से मेरा आतिथ्य किया था, सात्विकता की उपेक्षा कर मैं उसे खा गया। मेरा मन दूषित हुआ और मैं चोर हो गया। निरन्तर हुए भयंकर दस्तों से जब उसका दुष्प्रभाव जाता रहा, और मैं इस हार को वापस करने आ गया। सारांश यह है कि संसार एवं सृजक का काव्य सहज रूप में प्रवाहित होते रहने पर ही सबका कल्याण है। इसका छन्द भंग होने पर पर्यावरण का ही नहीं प्राणि मात्र का विनाश अवश्यम्भावी है।

-वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस समारोह

अमरोहा १४ फरवरी, दिन-शनिवार प्रचार कार्यालय मोहल्ला काली पगड़ी अमरोहा में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। यज्ञ में जनपद के सभी आर्यो ने आहुति दी। यज्ञ के ब्रह्मा हरिश्चन्द्र आर्य ने स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि क्रान्तिदर्शी समाज सुधारक-लेखक विचारक-देशभक्त स्वामी दयानन्द जी महाराज का जन्म उस समय हुआ जब भारतवर्ष में ब्रिटिश राज था समाज दिशा विहीन था अज्ञान अभाव और अत्याचार चरम पर था। धर्म अंध विश्वास पर्याय बन गया था। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सन् १८७५ में सार्वभौमिक सार्वदेशिक संगठन-आर्य समाज की स्थापना की अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा।

-हरिश्चन्द्र आर्य, अमरोहा-मुरादाबाद

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१९२, सम्पादक-९५२७४९६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती के ११५वें जन्म दिवस पर आर्य महासम्मेलन

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती के ११५वें जन्म दिवस १३ अप्रैल, २०१५ को दयानन्द मठ दीना नगर गुरूदास पुर पंजाब में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया है।

दिनांक १ अप्रैल से ११ अप्रैल तक विभिन्न ग्रामों में वेद प्रचार यात्रा निकाली जायेगी तथा सामवेद पारायण यज्ञ आरम्भ होगा यज्ञ के ब्रह्मा यतीन्द्र शास्त्री होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति १३ अप्रैल को प्रातः ६:३० बजे होगी। १० बजे से १ बजे तक आर्य महासम्मेलन होगा जिसकी अध्यक्षता स्वामी सुमेधानन्द, सांसद सीकर करें। ध्वजारोहण श्री चन्द्रमोहन मालिक वीर प्रताप जालंधर करेंगे। मुख्य वक्ता सर्वश्री सरदारी लाल आर्य जालंधर, रामफल आर्य सुन्दर नगर होंगे। आशीर्वाद दयानन्द दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी जी देंगे। ऋषि लंगर के साथ समारोह सम्पन्न हो जायेगा।

डॉ प्रशस्य मित्र शास्त्री को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी का विशिष्ट पुरस्कार

उ.प्र. संस्कृत अकादमी ने गुरूकुल अयोध्या के स्नातक तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध महोपदेशक एवं संस्कृत लेखक डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को उनकी संस्कृत भाषा के प्रति की गयी सेवाओं के लिए ५१०००/- इक्यावन हजार रूपये का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है।

यह पुरस्कार विगत २० मार्च २०१५ को विधान सभाध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय के हाथों प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. शास्त्री ने संस्कृत भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं तथा 'अनमीप्सितम्' नामक कथा-संग्रह पर आपको प्रख्यात साहित्य अकादमी सम्मान भी प्रदान किया जा चुका है।

डॉ. शास्त्री को राष्ट्रपति सम्मान भी प्रदान किया गया था।

आर्यमित्र परिवार उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें हार्दिक बधाई देता है। -सम्पादक

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर कानपुर में विशाल शोभा यात्रा

कानपुर! नगर की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर की ओर से १४ फरवरी, २०१५ दिन शनिवार को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की जयन्ती पर एक भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य वीर दल, विभिन्न विद्यालयों के बच्चे, सभी आर्य समाजों के सदस्य विभिन्न झांकियां इत्यादि सम्मिलित रहीं। यह शोभा यात्रा आर्य कन्या इण्टर कालेज, गोविन्द नगर से अपरान्ह ३ बजे प्रारम्भ होकर चावला मार्केट, आर्य समाज २ ब्लाक गोविन्द नगर तथा नन्दलाल चौराहा होते हुए आर्य समाज वेद मन्दिर, १३ ब्लाक गोविन्द नगर में सायं ५:३० बजे जनसभा में परिवर्तित हो गयी। सभा को होषंगाबाद से पधारे आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने संबोधित किया। पं. उपेन्द्र आर्य व श्री सुमित्र आर्य ने अपने भजनों द्वारा जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। सायंकाल प्रवचन भजन का कार्यक्रम ६ बजे तक चला। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री विनोद कुमार आर्य ने किया।

शोभा यात्रा में आर्य कन्या इन्टर कालेज गोविन्द नगर, पुरवार इण्टर कालेज नौबस्ता, दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपपुर चकेरी, नेताजी सुभाष इण्टर कालेज कृष्णा नगर, आर्य वैदिक इण्टर कालेज अर्मापुर, चन्द्रावती स्कूल नया शिवली रोड कल्यानपुर के बच्चों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। बच्चों के द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की झांकी प्रस्तुत की। बच्चे झण्डे बैनर लिए हुए चल रहे थे। नारी सम्मान स्वरूप दो बालिकाएं घोड़ों पर ओ३म् ध्वज लिए हुए चल रही थीं। आर्यवीर दल की रैली सबसे आगे मोटरसाइकल पर चल रही थी। बालिकाओं द्वारा शोभा यात्रा में यज्ञ किया गया। शोभा यात्रा में सभी समाजों के पदाधिकारी उपस्थित रहे। आयोजनकर्ता श्याम प्रकाश शास्त्री प्रधान जिला सभा, विनोद कुमार आर्य मंत्री जिला सभा शिव कुमार आर्य उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, हर्ष सिंह चौहान उप प्रधान, आनन्द आर्य उप प्रधान, अशोक आनन्द उपमंत्री, सरला चौधरी, वेद प्रकाश आर्य हनुमान प्रसाद आर्य, दुर्गा प्रसाद आर्य, पं. रवीन्द्र आर्य, सुरेन्द्र गेरा, चन्द्रकान्ता गेरा तथा राधेश्याम आर्य उपस्थित रहे।

विनोद कुमार आर्य, मंत्री
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कनपुर नगर

आर्य समाज शाहजहाँपुर का वार्षिक समारोह

आर्य समाज (रजि.) टाउन हाल शाहजहाँपुर का १३८वाँ वार्षिक समारोह दिनांक १०, ११, १२ अप्रैल, २०१५ को बड़ी धूम-धाम से मनाया जायेगा।

समारोह में आचार्य उषर्बुध राजस्थान, पं. भानु प्रकाश बहेड़ी, श्रीमती प्रभा शास्त्री बरेली व पं. राम बहादुर शास्त्री शाहजहाँपुर आदि विद्वान आमंत्रित किये गये हैं।

उक्त समारोह में प्रातः ६:३० से १०:३० बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा रात्रि ७:३० से १०:३० बजे तक भक्ति संगीत व प्रवचन होंगे। सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं से निवेदन है कि वह सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

-राजेश कुमार आर्य, मंत्री

ईश्वर की निरन्तर खोज

जब चित्त की एकाग्रावस्था अन्तर्मुखी बनाते हैं
तो अदृश्य में हम अन्तस के गहरे उतराते हैं।।
और आन्तरिक गुण तब अपने रूप विशेष बदल कर के।
ईश्वर के माधुर्य रूप का मधु चखते हैं छक कर के।।
यह मत सोचों, ईश ध्यान से ही केवल खोजे जाते।
अन्तर्ज्ञान आन्तरिक गहरा हो तो स्वात्म में वे आते।।
हर अच्छा गुण जो विचार अरू कार्यो में प्रगटाता है।
ईश्वर के सानिध्य-गुप्त अमृत रस को सरसाता है।।
अस्तु, यज्ञ रूप शुचि कर्मो को भी हम करते करते।
ईश्वर का सानिध्य लाभ हम सहज प्राप्त हैं कर सकते।।
जब आध्यात्मिक नेत्रद्वार से होकर हम अन्दर जाते।
तो जीवन निर्माण कार्यशाला में अपने को पाते।।
जो कि बुद्धिशील जीवनी शक्ति की निर्मात्री है।
और विश्व ब्रह्माण्ड सृजन कर समुचित उसे चलाती है।।
क्योंकि हम अन्तस में मन एकाग्र नहीं कर पाते हैं।
उस अदृश्य की छवि प्रकृति में अस्तु नहीं लख पाते हैं।
उस अदृश्य परमेश्वर का इन सबमें नाम लिखा होता।
वह अदृश्य ही दृश्यमान में होकर मौन छिपा रहता ।।
हंसते पुष्प, नील नभ प्रभृति, उसके ही हस्ताक्षर हैं।
रूप बदल क्षर होते से ये, पर अदृश्य प्रभु अक्षर हैं।।
बहुत भाग्यशाली हैं, हमने जो मानव तन पाया हैं।
उसे खोजने, पाने का इसमें साधन सब आया हैं।।
उसकी मूक-मौन भाषा को सुनने में ये समरथ है।
क्योंकि ये सब मनस, शरीरी आध्यात्मिक क्षमतायुत है।।
अस्तु निज अन्तस में उतरें, हम उसको जाने-पायें।
ये ही है परमार्थ सार्थ कर भव्य धन्यता को पायें।।

दयाशंकर गोयल
१५५४, डी-सुदामा नगर, इंदौर

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बाराबंकी द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आर्य समाज रसौली में जिला सभा के नेतृत्व में आर्य समाज स्थापना दिवस २१ मार्च, २०१५ को श्री शान्ति स्वरूप आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस उत्सव में आर्य समाज बाराबंकी के उप मंत्री राममोहन ओझा ने यज्ञ सम्पन्न कराते समय भारतीय नव सम्वत्सर का महत्व बताते हुए अपने संबोधन में कहा कि समस्त वैदिक मतावलम्बी अपने यहां सारे संस्कार एवं त्यौहार हिन्दी महीने एवं तिथि नक्षत्रानुसार मनाते है परन्तु खेद है कि नव वर्ष ग्रेगोरियन कैलेण्डर के अनुसार मनाते है। उक्त अवसर पर सत्य प्रकाश आर्य, डॉ. आर. एन. आर्य एवं डॉ. राजेश सिंह ने भजनों के माध्यम से नववर्ष पर प्रकाश डाला जिसमें ग्रामीण अंचल से आये तमाम लोग मौजूद थे।

-राम मोहन ओझा
बराबंकी

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।